

बोर्ड ऑफ़ कण्ट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया

बनाम

बिहार क्रिकेट संघ एवं अन्य

02 जनवरी, 2017

[मुख्य न्यायमूर्ति टी0 एस 0 ठाकुर, ए 0 एम 0 खानविलकर और डॉ0 डी0 वाई 0 चंद्रचूड़, न्यायमूर्तिगण]

बी.सी.सी.आई. का मामला:

न्यायालय की अवमानना-इस न्यायालय द्वारा दिनांक 18.06.2016 के अंतिम निर्णय और आदेश में लोढ़ा समिति की सिफारिशों की पुष्टि की गई-हालांकि, पर्याप्त समय दिए जाने के बावजूद, इस न्यायालय के फैसले और आदेश का पालन करने में बी.सी.सी.आई. विफल रही है। बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष (श्री अनुराग ठाकुर) द्वारा आई.सी.सी. के अध्यक्ष से आई.सी.सी. के अध्यक्ष के रूप में अपनी क्षमता में पत्र जारी करने का अनुरोध कि, कैग नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी और आई.सी.सी. से निलंबन का आह्वान करेगी-अभिनिर्धारित: बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष का आई.सी.सी. के अध्यक्ष से पत्र चाहने का आचरण इस न्यायालय के अंतिम फैसले के बाद बी.सी.सी.आई. के प्रमुख की ओर से इस न्यायालय के आदेश का पालन करने से बचने का एक प्रयास था-अध्यक्ष, बी.सी.सी.आई. के लिए अध्यक्ष आर्.सी.सी. से ऐसा कोई स्पष्टीकरण मांगने का कोई अवसर इस न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय के अनुसार बिल्कुल नहीं था। श्री ठाकुर ने अपने कार्यों और आचरण से खुद को बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में बने रहने के लिए अपात्र कर लिया है-उन्होंने इस न्यायालय के दिनांक 18.07.2016 के आदेश में बाधा डाली और अवरोधित किया-उनके खिलाफ न्यायालय की अवमानना के लिए कार्रवाई की जानी है।-गलत बयान देने के लिए उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया-बी.सी.सी.आई. और उससे संबद्ध राज्य संघों के सभी पदाधिकारी जो समिति द्वारा अनुशंसित और इस न्यायालय द्वारा स्वीकार किए गए मानदण्डों को पूरा करने में विफल रहे, वे पद छोड़ दें और पद पर बने रहना बंद कर दें-बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष और सचिव, बी.सी.सी.आई. के कार्यों से जुड़े रहना बंद कर दें और रुक जाये-बी.सी.सी.आई. के सबसे अधिक वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अध्यक्ष बी.सी.सी.आई. के कर्तव्य निष्पादित करें और संयुक्त सचिव, के कर्तव्यों का पालन करें-प्रशासकों की समिति अपने मुख्य कार्यकारी अधिकारी के माध्यम से बी.सी.सी.आई. के प्रशासन की निगरानी करेगी-प्रशासकों के नामों के संबंध में निर्देशों की घोषणा के लिए कार्यवाही सूचीबद्ध की जाएगी-दंड प्रक्रिया संहिता, 1973-धारा 195 सहपठित धारा 340-न्यायालय अवमानना अधिनियम, 1971

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय: सिविल अपील सं. 4235/2014

बॉम्बे उच्च न्यायालय के PIL NO. 55/2013 में न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 30.07.2013

के साथ

सिविल अपील सं। 4236 /2014 और 1155/ 2015

मनिंदर सिंह, ए.एस.जी., गोपाल सुब्रमण्यम, (ए.सी.), कपिल सिब्बल, अरविंद दत्तार, प्रमोद स्वरूप, वरिष्ठ अधिवक्ता। संतोष कृष्णन, अंकुर कश्यप, राघव चड्ढा, पवन भूषण, सुश्री राधा रंगास्वामी, सुश्री रंजीता रोहतगी, अभिनव मुखर्जी, अमित सिंह, सुश्री परीना स्वरूप, प्रवीण स्वरूप, सुश्री सुषमा वर्मा, साहिल, वी. के. बीजू, सुश्री रिया सचथे, अमित ए. पाई, सैथिल जगदीशन, निरनीमेश दुबे, विकास मेहता, एम. योगेश कन्ना, सुश्री निथ्या, रवींद्र बाना, आर.

बालासुब्रमण्यम, प्रभास बजाज, अक्षय अमृतांशु, सुश्री आरती शर्मा, अनन्या मिश्रा, राज बहादुर, एम. के. मारोरिया, अमोल चितले, सुश्री प्रज्ञा बघेल, सुश्री समतेन डोमा, निमिमेश दुबे, गगन गुप्ता, सुश्री रश्मि सिंह, सुश्री मंजू शर्मा, वैकिता सुब्रमण्यम टी. आर., गौरव शर्मा, ए. एस. भास्मे, सुश्री सोनिया माथुर, श्रीमती ललिता कौशिक, श्री पाल सिंह, ई. सी. अग्रवाल, राघवेंद्र एस. श्रीवत्स, अनीश आर. शाह, मुकेश कुमार मारोरिया, पराग एम. श्रॉफ, श्रीकांत एन. तेरदल, प्रवीण स्वरूप, सुश्री लिज मेथ्यू, अंशुमन अशोक, सुश्री कामाक्षी एस. मेहलवाल अधिवक्तागण उपस्थित पक्षकारों के लिए।

न्यायालय का निम्नलिखित आदेश दिया गया था

आ दे श

1. यह कार्यवाही 21 अक्टूबर 2016 को जारी आदेश और निर्देशों की अगली कड़ी है। इस न्यायालय के पिछले आदेश में, तीन सदस्यीय समिति (जिसमें न्यायमूर्ति आर. एम. लोढ़ा, न्यायमूर्ति अशोक भान और न्यायमूर्ति आर. वी. रवींद्रन शामिल थे) द्वारा प्रस्तुत स्थिति रिपोर्ट पर विचार किया गया था।

2. समिति को 18 जुलाई 2016 के इस न्यायालय के निर्णय और आदेश के कार्यान्वयन की देखरेख करने का काम सौंपा गया था। इस न्यायालय के फैसले को अंतिम रूप मिल गया है। समीक्षा और सुधारात्मक याचिकाओं को भी खारिज कर दिया गया है। अपने निर्णय द्वारा, इस न्यायालय ने 18 दिसंबर 2015 की एक रिपोर्ट में समिति द्वारा की गई सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है जिसमें बी.सी.सी.आई. की संरचना, संगठन और कार्यप्रणाली में सुधार का प्रावधान किया गया है। बी.सी.सी.आई. के कार्यप्रणाली को पारदर्शी, उद्देश्यपूर्ण और जवाबदेह, उस विश्वास के प्रति जिससे वह एंसे निकाय के रूप में प्रभावित है, जो एक ऐसे खेल के मामलों की अध्यक्षता करता है जिसके लाखों अनुयायी हैं, इस तरह की कवायद आवश्यक है। इस न्यायालय ने अपने फैसले में कहा था कि आशा है कि इसके निर्देशों को लागू करने की प्रक्रिया चार महीने या अधिकतम छह महीने की अवधि के भीतर पूरा किया जायेगा। समिति द्वारा प्रस्तुत स्थिति रिपोर्ट में दर्ज किया गया कि इस न्यायालय के निर्देशों की अनदेखी की गई, बी.सी.सी.आई. द्वारा समिति के समक्ष असफलता प्रस्तुत करने के लिए कार्रवाई की गई और समिति द्वारा जारी निर्देशों का उल्लंघन किया गया। समिति ने पाया कि बी.सी.सी.आई. ने बार-बार उसके और इस न्यायालय के अधिकार को कम करने के लिये कई बयान और कार्य करत हुये कदम उठाए हैं और "पूरी तरह से अव्यवस्थित हैं यहां तक कि अवमानना का गठन करेंगे"।

3. 7 अक्टूबर 2016 को, समिति द्वारा प्रस्तुत स्थिति रिपोर्ट पर ध्यान देते हुए, इस न्यायालय ने निम्नलिखित प्रथम दृष्टया जांच परिणाम दर्ज किए:

"..... 18 जुलाई, 2016 से घटनाओं का क्रम और स्थिति रिपोर्ट में संदर्भित प्रथम दृष्टया यह धारणा देता है कि बी.सी.सी.आई. ने समिति को अपना पूरा सहयोग देना बंद कर दिया है और एक अवरोधक और कभी-कभी एक अवज्ञाकारी रवैया अपनाया जिसे समिति ने ध्यान में रखा है और एक बाधा के रूप में वर्णित किया है जो न केवल समिति को बल्कि इस न्यायालय की गरिमा को भी कई बयानों और कार्यों के साथ कम करता है, जो समिति के अनुसार पूरी तरह से अव्यवस्थित हैं और यहां तक कि अवमानना भी गठित हो सकती हैं।

4. 7 अक्टूबर 2016 को, इस न्यायालय ने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि 21 अगस्त 2016 को समिति द्वारा जारी किए गए निर्देशों कि बी.सी.सी.आई. के ए.जी.एम. वर्ष 2015-16 के लिये केवल नियमित कार्य कर सकते हैं और वर्ष 2016-17 के लिए किसी भी व्यवसाय या मामले को समिति की सिफारिशों के अनुसरण में संघ के ज्ञापन और नियमों को अपनाने के बाद ही निपटाया जा सकता है, जिसमें राज्य संघों के पक्ष में करोड़ों रुपये की पर्याप्त राशि वितरित की गई थी। बी.सी.सी.आई. ने न्यायालय को सूचित किया था कि प्रस्तावित एम.ओ.ए. को अपनाने में उसकी विफलता का एक कारण उसके राज्य संघों के द्वारा उसे स्वीकार करने की अनिच्छा थी। इस पृष्ठभूमि में, न्यायालय इस आशय के निर्देश जारी करने के लिए विवश थी कि केवल उन संघों को छोड़कर अन्य राज्य संघों को आगे कोई राशि वितरित नहीं होगी जो समिति द्वारा सुझाए गए तथा न्यायालय द्वारा स्वीकार किये गये सुधारों को आरंभ करते हैं।

5. एक अन्य मुद्दा जो चिंता का विषय था, वह बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष (श्री अनुराग ठाकुर) का आचरण था, जैसा कि समिति ने अभिलिखित किया, जिन्होंने आई.सी.सी. के अध्यक्ष से यह कहने के लिए कहा था कि इस न्यायालय द्वारा नियुक्त समिति 'सरकारी हस्तक्षेप' के बराबर है। यहां यह ध्यान दिया जा सकता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को दिए गए एक साक्षात्कार में, आई.सी.सी. के अध्यक्ष ने कहा कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने आई.सी.सी. से एक पत्र मांगा है कि सी.ए.जी. के एक नामित व्यक्ति की नियुक्ति (समिति की सिफारिशों के संदर्भ में 18 जुलाई 2016 को इस न्यायालय द्वारा निर्देशित) सरकारी हस्तक्षेप माना जायेगा जो बी.सी.सी.आई. को आई.सी.सी. की सदस्यता से निलंबन का आह्वान करेगा। 7 अक्टूबर 2016 के इसके आदेश द्वारा, बी.सी.सी. के अध्यक्ष को स्थिति को स्पष्ट करते हुए एक व्यक्तिगत हलफनामा दायर करने का निर्देश दिया गया था।

6. बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष और आई.सी.सी. के अध्यक्ष श्री शशांक मनोहर के मध्य 6 और 7 अगस्त 2016 को दुबई में आई.सी.सी. शासन समीक्षा समिति की बैठक के दौरान हुई में हुई बैठक में उनके मध्य क्या बातचीत हुई इस संबंध में इस न्यायालय के समक्ष दो संस्करण थे। बी.सी.सी.आई. के प्रशासन और खेल विकास के महाप्रबंधक श्री रत्नाकर शिवराम शेटी ने अपने जवाब में कहा था:

"ऐसा प्रतीत होता है कि श्री डेविड रिचर्डसन आई.सी.सी. के सी.ई.ओ. ने एक साक्षात्कार दिया था जिसमें गलत कहा कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने आई.सी.सी. से एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया था जिसमें कहा गया था कि इस माननीय न्यायालय का हस्तक्षेप सरकारी हस्तक्षेप के बराबर था। यह कहा गया है कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष या बी.सी.सी.आई. के किसी भी पदाधिकारी द्वारा उक्त सज़न को ऐसा कोई पत्र या मौखिक अनुरोध कभी नहीं किया गया था। यह स्पष्ट है कि श्री रिचर्डसन ने इस मुद्दे के संबंध में खुद को भ्रमित कर लिया है। इस मुद्दे पर इस तथ्य के आलोक में विचार करने की आवश्यकता है कि श्री शशांक मनोहर के वरिष्ठ अधिवक्ता ने बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में स्पष्ट रूप से राय दी थी कि बी.सी.सी.आई. में सी.ए.जी. की नियुक्ति के परिणामस्वरूप बी.सी.सी.आई. को निलंबित कर दिया जाएगा क्योंकि यह सरकारी हस्तक्षेप होगा। वास्तव में यह इस माननीय न्यायालय के समक्ष हलफनामे पर प्रस्तुत किया गया था। हालाँकि, आई.सी.सी. के अध्यक्ष के रूप में, श्री मनोहर ने एक इसके विपरीत कथन किया और कहा कि यह बी.सी.सी.आई. मे सरकारी हस्तक्षेप के बराबर नहीं होगा। इसी संदर्भ में एक चर्चा श्री शशांक मनोहर और श्री अनुराग ठाकुर के मध्य दुबई में एक बैठक के दौरान हुई थी जिसमें श्री अनुराग ठाकुर ने एक अनौपचारिक कार्यक्रम के दौरान स्पष्टीकरण माँगा था, कि अगर सी.ए.जी. को बी.सी.सी.आई. द्वारा अपने प्रबंधन के हिस्से के रूप में शामिल किया जाये तो सही स्थिति में क्या होता, और क्या यह सरकारी हस्तक्षेप के रूप में होगा जैसा कि बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान श्री मनोहर द्वारा सलाह और पुष्टि की गई थी। (जोर दिया गया).....

प्रतिक्रिया के पैराग्राफ 7 (डी) में एक कथन है कि:

"यह गलत आरोप लगाया जा रहा है कि बी.सी.सी.आई.अध्यक्ष ने आई.सी.सी. से एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया जिसमें कहा गया है कि यह समिति सरकारी हस्तक्षेप के समान है। यह सुझाव अस्वीकार कर दिया जाता है"। (जोर दिया गया)

दूसरी ओर, बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने अपने जवाब में (जो इस न्यायालय के निर्देशों के अंतर्गत दाखिल किया गया) निम्नलिखित रूप में कहा गया है:

"इस संदर्भ में यह सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है कि एक आई.सी.सी. की शासन समीक्षा समिति की बैठक 6" और 7" अगस्त 2016 को दुबई में होने वाली थी। वित्तीय मॉडल से संबंधित कुछ मुद्दे थे जिनके लिए मेरे इनपुट की आवश्यकता थी और इस तरह मुझे आई.सी.सी. द्वारा उक्त बैठक के लिए आमंत्रित किया गया था। बैठक के दौरान आई.सी.सी. के संवैधानिक प्रावधानों की समीक्षा के संबंध में, मैंने आई.सी.सी. के अध्यक्ष श्री शशांक मनोहर को बताया कि जब वे बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष थे तो उन्होंने यह विचार रखा था कि एपेक्स

काउंसिल में सी. ए. जी. के नामित व्यक्ति की नियुक्ति करने वाली न्यायमूर्ति लोढ़ा समिति की सिफारिशों के अनुसार, यह सरकारी हस्तक्षेप के बराबर है और आई.सी.सी. से निलंबन की कार्रवाई का आह्वान कर सकता है। इसलिए मैंने उनसे अनुरोध किया कि क्या वह आई.सी.सी. के अध्यक्ष होने के नाते, उनके द्वारा बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में रखे गये विचार के संबंध में एक स्पष्टीकरण पत्र जारी किया जा सकता है। श्री. मनोहर ने बैठक में मुझे समझाया कि जब उक्त स्टैंड उनके द्वारा लिया गया था, मामला इस माननीय न्यायालय के समक्ष लंबित था और निर्णय नहीं लिया गया था। हालाँकि, इस माननीय न्यायालय ने दिनांक 18.07.2016 पर इस मामले में अपना निर्णय दिया। उक्त निर्णय में, इस माननीय न्यायालय ने इस निवेदन को खारिज कर दिया है कि एपेक्स काउंसिल में कैंग के नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप होगी। और यह भी माना था कि आई.सी.सी. इस नियुक्ति की सराहना करेगी क्योंकि इससे बोर्ड के वित्त में पारदर्शिता आएगी। (जोर दिया गया)

7. बी.सी.सी.आई. की ओर से श्री शेटी द्वारा दायर जवाब में इस बात से स्पष्ट इन्कार किया गया था कि इसके अध्यक्ष ने आई.सी.सी. से एक पत्र यह उल्लेख करते हुये जारी करने का अनुरोध किया था कि समिति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर है। दूसरी ओर, बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने 7 अक्टूबर 2016 को इस न्यायालय के निर्देशों के अनुसरण में जो हलफनामा दायर किया था, उसमें उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने आई.सी.सी. के अध्यक्ष से एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया था जिसमें उन्होंने बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में जो स्थिति ली थी उसे स्पष्ट करने के लिए कहा था (कि सी. ए. जी. नामित व्यक्ति की नियुक्ति के लिए समिति की सिफारिश सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी और बी.सी.सी.आई. को आई.सी.सी. की सदस्यता से निलंबित किया जा सकता है)। श्री शेटी ने यह खुलासा नहीं किया था कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष द्वारा पत्र के लिए ऐसा कोई अनुरोध किया गया था, जबकि पत्र के अनुसार उन्होंने ऐसा अनुरोध किया था। श्री शेटी ने वास्तव में इस बात से इन्कार किया कि श्री अनुराग ठाकुर द्वारा आई.सी.सी. अध्यक्ष को पत्र लिखने का कोई अनुरोध किया गया था।

8. इस न्यायालय ने 21 अक्टूबर 2016 के अपने आदेश में निम्नानुसार कहा है:

"10. जो भी हो, यह गंभीर चिंता का विषय है कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने 18 जुलाई 2016 को इस न्यायालय के अंतिम निर्णय और आदेश की घोषणा के बाद भी, आई.सी.सी. के अध्यक्ष को एक पत्र "स्पष्ट करने" के लिए (जैसा कि वे कहते हैं) जारी करने का अनुरोध किया था जिसमें उन्होंने बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में जो स्थिति ली थी उसे स्पष्ट करने के लिए कहा था कि सी.ए.जी. नामित व्यक्ति की नियुक्ति के लिए समिति की सिफारिश सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी और बी.सी.सी.आई. को आई.सी.सी. की सदस्यता से निलंबित किया जा सकता है। इस न्यायालय के अंतिम फैसले में कैंग नामित व्यक्ति को शामिल करने के लिए समिति की सिफारिश को स्वीकार करने के बाद बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के लिए ऐसा करने का कोई अवसर नहीं था। 18 मई 2016 के इस न्यायालय के फैसले में, इस न्यायालय ने निम्नलिखित टिप्पणी की:

"77. हमारे विचार में इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि बी.सी.सी.आई. द्वारा स्वतः या एक सक्षम न्यायालय के निर्देश के तहत विशेष रूप से अपने काम को सुव्यवस्थित करने और बी.सी.सी.आई. जैसे सार्वजनिक कार्यों का निर्वहन करने वाले संगठन से अपेक्षित वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किए गए उपाय को बी.सी.सी.आई. के निलंबन/मान्यता रद्द करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप के रूप में देखा जा सकता है। राज्य के महालेखाकार और सी एंड एजी के नामित व्यक्ति की उपस्थिति में गलती खोजने की जगह, आई.सी.सी. हमारी राय में इस तरह के किसी भी कार्य की सराहना करेगा। क्योंकि इसके लिए उठाए गए कदम से बी.सी.सी.आई. के काम करने के बारे में संदेह को रोका जा सकेगा, विशेष रूप से बी.सी.सी.आई. के धन के प्रबंधन के संबंध में और बी.सी.सी.आई. और राज्य संघों के मामले निष्पक्षता और प्रभावी प्रबंधन में जनता के विश्वास को प्रेरित करने के लिए आवश्यक पारदर्शिता और निष्पक्षता लायेगा। समिति द्वारा अनुशंसित नामांकित व्यक्ति वित्तीय मामलों और उनसे संबंधित या आनुषंगिक मामलों में राज्य संघ और बी.सी.सी.आई. के विवेक संरक्षक के रूप में कार्य करेंगे जो किसी भी तरह से क्रिकेट के खेल के प्रचार और

विकास के लिए बी.सी.सी.आई. के प्रदर्शन या कामकाज पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेंगे। इसलिए समिति की सिफारिशों के खिलाफ की गई आलोचना निराधार है और तदनुसार अस्वीकार की गई।

11 यह निष्कर्ष जो इस न्यायालय के अंतिम निर्णय और आदेश में निहित है, बी.सी.सी.आई. को बाध्य करता है। प्रथम दृष्टया, बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष द्वारा 18 जुलाई 2016 को इस न्यायालय द्वारा सिफारिश को स्वीकार किए जाने के बाद सीएजी नामित व्यक्ति की नियुक्ति के लिए समिति की सिफारिश की वैधता पर सवाल उठाने के लिए एक रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया गया है। हम वर्तमान में उसके आचरण के संबंध में की जाने वाली कार्यवाही पर आगे विचार करना टाल देते हैं। श्री शेड्डी ने स्थिति रिपोर्ट पर अपने जवाब में दावा किया कि आई.सी.सी. के सी.ई.ओ. ने अपने साक्षात्कार में "गलत" कहा था कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने आई.सी.सी. से एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया था जिसमें कहा गया था कि कि इस न्यायालय का हस्तक्षेप सरकारी हस्तक्षेप था। श्री शेड्डी का बयान आई.सी.सी. के सी.ई.ओ. द्वारा कथित रूप से कही गई बात से भिन्न है। इस न्यायालय के लिए श्री शेड्डी और श्री रिचर्डसन के कथन की सत्यता का आकलन करना भी आवश्यक हो सकता है। श्री शशांक मनोहर, बी.सी.सी.आई. के तत्कालीन अध्यक्ष वर्तमान में आई.सी.सी. के अध्यक्ष हैं। इस आदेश की एक प्रति समिति के सचिव द्वारा उसे भेजी जाएगी ताकि वह अपना पक्ष निर्धारित करते हुए जवाब दाखिल करने पर विचार कर सके, ताकि रिकॉर्ड को सही किया जा सके और इस न्यायालय की सहायता की जा सके। श्री मनोहर श्री रिचर्डसन से अपना जवाब दाखिल करने से पहले रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र हैं।"

इस न्यायालय द्वारा 21 अक्टूबर, 2016 को जारी किए गए निर्देशों के पालन में आई.सी.सी. के अध्यक्ष श्री शशांक मनोहर से प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है जिसे न्यायमित्र द्वारा इस न्यायालय के समक्ष रखा गया।

9. बी.सी.सी.आई. द्वारा इस न्यायालय के अंतिम निर्णय को लागू करने के लिए क्या उचित और पर्याप्त कदम उठाए गए थे की समीक्षा करने के बाद, इस न्यायालय ने अपने दिनांक 21 अक्टूबर 2016 के आदेश में निम्नलिखित निष्कर्ष दर्ज किए:

"15. उन कारणों के लिए जो पहले हमारे साथ 7 अक्टूबर 2016 के इस न्यायालय के आदेश में रहे हैं और उन कारणों के लिए जो हमने ऊपर दिए हैं, हम वर्तमान मामले में बी.सी.सी.आई. के आचरण को गंभीरता से लेने के लिए इच्छुक हैं। प्रथम दृष्टया निष्कर्ष जो पिछले क्रम में आए थे के बावजूद, आगे सुनवाई स्थगित कर दी गई थी। **बी.सी.सी.आई. की स्थिति में कोई बदलाव नहीं किया गया है। बी.सी.सी.आई. की हठधर्मिता जारी है।** यदि बी.सी.सी.आई. को समिति द्वारा निर्धारित समय-सीमा का पालन करने में कोई कठिनाई थी, तो उचित मार्ग समिति के पास जाना था। यहां तक कि बी.सी.सी.आई. द्वारा इस कार्यवाही के दौरान जो शिकायत की गई थी, कि समिति के कुछ निर्देश इस न्यायालय द्वारा निर्धारित मापदंडों से परे चले गए हैं, पहली बार में समिति के समक्ष आग्रह किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। (जोर दिया गया)

10. बी.सी.सी.आई. की ओर से विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा एक बयान दिया गया था कि बी.सी.सी.आई. समिति के समक्ष उसकी उन सिफारिशों जिसका अनुपालन किया जाना कहा गया है, को स्थापित कर अपनी सद्भाविकता स्थापित करेगा। तदनुसार, बी.सी.सी.आई. को इस न्यायालय के निर्देशों के साथ अपने अनुपालन को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करने के लिए, हमने इस उम्मीद में प्रशासकों की नियुक्ति (जैसा समिति द्वारा मांगी गई) के लिए उस स्तर पर एक निर्देश जारी करने से रोक दिया कि बी.सी.सी.आई. इस बीच इस न्यायालय के निर्णय और आदेश का पालन करेगा। ऐसा करते समय, इस न्यायालय ने कहा कि:

"19..... हम वर्तमान में इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि, प्रथम दृष्टया, समिति द्वारा प्रस्तुत स्थिति रिपोर्ट में सार है। इस न्यायालय के अंतिम निर्णय 18 जुलाई 2016 का कार्यान्वयन को प्रथम दृष्टया बी.सी.सी.आई. और उसके पदाधिकारियों की हठधर्मिता से बाधित किया गया है। हालांकि, बी.सी.सी.आई. की ओर से प्रस्तुत अनुरोध को ध्यान में रखते हुए कि वह राज्य संघों को इस न्यायालय के निर्णय के अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए राजी

करने के लिए वह हर संभव प्रयास करेगा और क्रिकेट के खेल के व्यापक हित पर उचित ध्यान देते हुए हम इस स्तर पर समिति द्वारा किए गए अनुरोध के संदर्भ में प्रशासकों की नियुक्ति के लिए एक निर्देश जारी करने से बच रहे हैं, ताकि बी.सी.सी.आई. अपने अच्छे विश्वास और इसके लिए उठाए गए कदमों का प्रदर्शन समिति के समक्ष पहली बार में अनुपालन और सुनवाई की अगली तारीख तक इस न्यायालय के समक्ष कर सके। (जोर दिया गया)

11. इस न्यायालय द्वारा जारी पिछले निर्देशों के अनुसरण में, 21 अक्टूबर 2016 को समिति ने 7 नवंबर 2016 को एक और स्थिति रिपोर्ट दायर की, जिस पर इस न्यायालय द्वारा 8 नवंबर 2016 को आदेश पारित किए गए। समिति ने 14 नवंबर 2016 को एक और स्थिति रिपोर्ट दाखिल की है जिसमें निम्नलिखित निर्देश मांगे गए हैं:

- (i) कि बी.सी.सी.आई. और राज्य संघों के सभी पदाधिकारी जो 4 अक्टूबर 2016 की इसकी रिपोर्ट में और इस न्यायालय द्वारा स्वीकार किए गए निहित मानदंडों के आधार पर अयोग्य ठहराए गए हैं हैं, उन्हें तत्काल पद को धारण करना बंद करना चाहिए।
- (ii) सभी प्रशासनिक और प्रबंधन मामलों को बी.सी.सी.आई. के सी. ई. ओ. द्वारा कार्यालय में पदाधिकारियों को सूचित किए बिना किया जाना चाहिए; और
- (iii) सी. ई. ओ. द्वारा बी.सी.सी.आई. के प्रशासन के पर्यवेक्षण के लिए नामित पर्यवेक्षक की नियुक्ति।

समिति ने सुझाव दिया है कि उसकी अपनी भूमिका समग्र नीति और निर्देशन तक सीमित हो सकती है न कि बी.सी.सी.आई. के वास्तविक प्रशासन तक।

12. बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने 3 दिसंबर 2016 को इस कार्यवाही में एक हलफनामा दाखिल किया है। हलफनामे में कहा गया है कि न तो कार्यकारी समिति की बैठकों में अध्यक्ष और न ही बी.सी.सी.आई. के सचिव को मतदान का अधिकार होता है। हलफनामे में निम्नलिखित शब्दों में कहा गया है कि राज्य संघों ने समिति द्वारा की गई और इस न्यायालय द्वारा स्वीकार की गई सिफारिशों को इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है :

"तदनुसार, माननीय सचिव ने बी.सी.सी.आई. के आम सभा के लिए ऊपर निर्दिष्ट उक्त बैठक दिनांक 30.9.2016 के लिए बुलाई।

बैठक अगले दिन यानि 01.10.2016 पर फिर से शुरू हुई

मैं आगे कहता हूं कि जब मैं आम सभा की बैठक में माननीय अध्यक्ष के रूप में बैठा हूं तो मेरे पास वोट नहीं होता है, न ही माननीय सचिव के पास

मैं आगे कहता हूं कि मैं एक माननीय अध्यक्ष के रूप में सदस्यों को पूर्ण ज्ञापन को अपनाने के लिए भले ही इस माननीय न्यायालय के एक आदेश के साथ, मजबूर करने की स्थिति में नहीं हूं, जैसाकि सिफारिश किया गया है, क्योंकि सदस्यों की राय है कि तमिलनाडु सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1975 के प्रावधानों के अनुसार, जिसके तहत बी.सी.सी.आई. पंजीकृत है, वे अपने ज्ञापन में केवल तभी संशोधन कर सकते हैं जब तीन चौथाई सदस्य उपस्थित हों और मतदान करने के हकदार ज्ञापन में परिवर्तनों को स्वीकार करें।

(छ) कोई भी आपराधिक अपराध करने के लिए किसी न्यायालय द्वारा आरोपित किया गया है।

18. समिति ने 14 नवंबर 2016 की अपनी स्थिति रिपोर्ट में न्यायालय का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है कि बी.सी.सी.आई. और राज्य संघों दोनों के कई पदाधिकारी अपने पदों पर बने हुए हैं, हालांकि वे उपरोक्त मानदंडों के संदर्भ में अयोग्य हैं जिन्हें इस न्यायालय द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। ऊपर उल्लिखित मानदंडों के

बावजूद अपने पदों पर बने रहने में जिन व्यक्तियों का निहित स्वार्थ है से यह सुनिश्चित हुआ है कि न्यायालय का आदेश अवरुद्ध और बाधित हो। हमें जोर देने की जरूरत है कि क्रिकेट मैदान का मैदान व्यक्तिगत मैदान या जागीर नहीं है। इसलिए हमें आदेश देना चाहिए और निर्देश देना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति उपरोक्त मानदंडों का उल्लंघन करते हुए बी.सी.सी.आई. या राज्य संघ के पदाधिकारी के रूप में नियुक्ति का हकदार नहीं रहेगा। बी.सी.सी.आई. और राज्य संघों के सभी मौजूदा पदाधिकारी जो उपरोक्त मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं, इस आदेश की तारीख से अयोग्य घोषित कर दिए जाएंगे।

19. यह न्यायालय को श्री अनुराग के आचरण के मुद्दे की ओर ले जाता है, इस न्यायालय द्वारा 18 जुलाई 2016 के अंतिम निर्णय आदेश में इस दलील को कि कैंग के एक नामित व्यक्ति की नियुक्ति बी.सी.सी.आई. के मामलों में सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी, विशेष रूप से नकारा गया था। इस न्यायालय ने अपने निर्णय में निम्नलिखित टिप्पणी की थी:

"77. हमारे विचार में इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि बी.सी.सी.आई. द्वारा स्वतः या एक सक्षम न्यायालय के निर्देश के तहत विशेष रूप से अपने काम को सुव्यवस्थित करने और बी.सी.सी.आई. जैसे सार्वजनिक कार्यों का निर्वहन करने वाले संगठन से अपेक्षित वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किए गए उपाय को बी.सी.सी.आई. के निलंबन/मान्यता रद्द करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप के रूप में देखा जा सकता है। राज्य के महालेखाकार और सी एंड एजी के नामित व्यक्ति की उपस्थिति में गलती खोजने की जगह, आई.सी.सी. हमारी राय में इस तरह के किसी भी कार्य की सराहना करेगा। क्योंकि इसके लिए उठाए गए कदम से बी.सी.सी.आई. के काम करने के बारे में संदेह को रोका जा सकेगा, विशेष रूप से बी.सी.सी.आई. के धन के प्रबंधन के संबंध में और बी.सी.सी.आई. और राज्य संघों के मामले निष्पक्षता और प्रभावी प्रबंधन में जनता के विश्वास को प्रेरित करने के लिए आवश्यक पारदर्शिता और निष्पक्षता लायेगा। समिति द्वारा अनुशंसित नामांकित व्यक्ति वित्तीय मामलों और उनसे संबंधित या आनुषंगिक मामलों में राज्य संघ और बी.सी.सी.आई. के विवेक संरक्षक के रूप में कार्य करेंगे जो किसी भी तरह से क्रिकेट के खेल के प्रचार और विकास के लिए बी.सी.सी.आई. के प्रदर्शन या कामकाज पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेंगे। इसलिए समिति की सिफारिशों के खिलाफ की गई आलोचना निराधार है और तदनुसार अस्वीकार की गई।"

20. एक बार जब न्यायालय द्वारा यह स्थिति निर्धारित की जा चुकी थी, तो 6 और 7 अगस्त 2016 को दुबई में आयोजित की गई आई.सी.सी. शासन समीक्षा समिति की बैठक में बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के लिए आई.सी.सी. के अध्यक्ष से एक पत्र मांगने के लिए कोई अवसर नहीं था। इस तरह का आग्रह न्यायालय के आदेशों के कार्यान्वयन को विफल करने का एक प्रयास मात्र था। यह इंगित करने के लिए एक रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया गया था कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों को लागू करने से आई.सी.सी. के सदस्य के रूप में बी.सी.सी.आई. की स्थिति को खतरे में डालने का जोखिम होगा। इस न्यायालय के आदेश के अनुसरण में, श्री शशांक मनोहर (अध्यक्ष-आई.सी.सी.) ने 2 नवंबर 2016 को समिति को संबोधित एक ईमेल में निम्नलिखित खुलासा किया है:

"मैं यह बताना चाहूंगा कि आई.सी.सी. के शासन और वित्तीय संरचना पर विचार करने के लिए 6 अगस्त, 2016 को दुबई में आई.सी.सी. के कार्यकारी समूह की एक बैठक का आयोजन किया गया था। बैठक में मेरे और श्री अनुराग ठाकुर के अलावा, श्री जाइल्स क्लार्क, श्री डेविड पीवर और श्री इमरान ख्वाजा, जो आई.सी.सी. के सभी निदेशक हैं, उपस्थित थे। आई.सी.सी. के सी.ई.ओ. श्री डेविड रिचर्डसन और आई.सी.सी. के सी.ओ.ओ. श्री लेन इलिगिन्स भी उपस्थित थे।

बैठक के दौरान श्री ठाकुर ने मुझे बताया कि जब मैं बी.सी.सी.आई. का अध्यक्ष था तो मेरे कहने पर उच्चतम न्यायालय के समक्ष एक निवेदन दिया गया था कि शीर्ष परिषद में कैंग के एक नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप हो सकता है और आई.सी.सी. से निलंबन की कार्रवाई का आह्वान कर सकता है, इसलिए उन्होंने मुझसे इस संबंध में एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया।

मैंने आई.सी.सी. अध्यक्ष के रूप में इस तरह का पत्र जारी करने से इन्कार कर दिया और उन्हें समझाया कि जब न्यायालय मामले की सुनवाई कर रही थी तब उक्त प्रस्तुतीकरण माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। हालांकि, 18.07.2016 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने मामले में अपना फैसला सुनाया और यह प्रस्तुतीकरण खारिज दिया कि कैंग के एक नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने आगे कहा कि शीर्ष परिषद में कैंग नामित व्यक्ति की नियुक्ति या तो बी.सी.सी.आई. द्वारा स्वतः या किसी सक्षम न्यायालय के आदेश के तहत की गई, जिसका उद्देश्य वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता लाना है, को सरकारी हस्तक्षेप के रूप में नहीं देखा जा सकता है, जिससे आई.सी.सी. द्वारा बी.सी.सी.आई. के निलंबन का आह्वान हो।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने आगे कहा कि आई.सी.सी. इसकी सराहना करेगा कि इस तरह के नामित व्यक्ति की नियुक्ति से बोर्ड के वित्त में पारदर्शिता आएगी।

इसलिए मैंने श्री ठाकुर को समझाया कि इस मुद्दे का फैसला भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय जो देश का सर्वोच्च न्यायालय है और जिसका निर्णय सभी को बाध्य करता है, द्वारा किया गया है, मैं उन्हें ऐसा कोई पत्र नहीं दे सकता। (जोर दिया गया)

21. श्री शशांक मनोहर की प्रतिक्रिया से संकेत मिलता है कि बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष ने 6 अगस्त 2016 को उनसे अनुरोध किया कि वे बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में अपनायी गयी स्थिति या विचार के संदर्भ में आई.सी.सी. के अध्यक्ष के रूप में अपनी क्षमता में एक पत्र जारी करें ("कि कैंग नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी और आई.सी.सी. से निलंबन की कार्रवाई का आह्वान करेगी")। इस न्यायालय के अंतिम निर्णय और आदेश के बाद बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष का अगस्त 2016 में आई.सी.सी. के अध्यक्ष से पत्र की मांग करने का आचरण और कुछ नहीं बल्कि, बी.सी.सी.आई. के प्रमुख का इस न्यायालय के आदेश का पालन करने से बचने के लिए एक प्रयास है। 15 अक्टूबर 2016 के श्री ठाकुर के हलफनामे से भी यह स्पष्ट है कि उन्होंने एक पत्र मांगा था (हालांकि उन्होंने कहा है कि उन्होंने आई.सी.सी. अध्यक्ष से उस स्थिति को स्पष्ट करने का अनुरोध किया था जो उन्होंने बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष के रूप में ली थी)। उस संस्करण के अनुसार देखने पर भी, हम इस बात पर ध्यान देने के लिए विवश हैं कि इस न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले के आधार पर बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के लिए आई.सी.सी. के अध्यक्ष से ऐसा कोई स्पष्टीकरण मांगने का कोई अवसर नहीं था। इसके अलावा, घटनाओं के क्रम के बारे में, श्री ठाकुर द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण की सत्यता पर संदेह करने के हम पर्याप्त कारण पाते हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि श्री रत्नाकर शिवराम शेटी द्वारा दर्ज की गई स्थिति रिपोर्ट के जवाब में समिति ने वहां श्री मनोहर और श्री ठाकुर के बीच दुर्बई में हुई चर्चा का संदर्भ दिया था और श्री ठाकुर द्वारा स्पष्टीकरण मांगा गया था कि यदि बी.सी.सी.आई. द्वारा कैंग नामित व्यक्ति को शामिल किया जाता है तो "सटीक स्थिति क्या होगी"। श्री शेटी ने विशेष रूप से इस बात से इन्कार किया कि श्री ठाकुर ने आई.सी.सी. अध्यक्ष से एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया था। श्री शेटी की प्रतिक्रिया अभिलेखों पर आधारित थी। कुछ "स्पष्टीकरण" का यह संदर्भ स्पष्ट रूप से 22 अगस्त 2016 को आयोजित बी.सी.सी.आई. कार्य समिति की कथित बैठक के कार्यवृत्त के आधार पर नहीं था जो सुनवाई के दौरान इस न्यायालय के आदेश 21 अक्टूबर 2016 से पहले बी.सी.सी.आई. के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा रिकॉर्ड पर रखी गई थी। अगर उक्त बैठक की कार्यवाही श्री शेटी के समक्ष होता तो, उन्होंने उक्त शर्तों में एक खुलासा किया होता। कथित बैठक की कार्यवृत्त इस प्रकार है:

"श्री अनुराग ठाकुर अध्यक्षता में थे और उन्होंने आदेश देने के लिए बैठक बुलाई और सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने सदस्यों को 6 और 7 अगस्त 2016 को दुर्बई में आई.सी.सी. शासन समीक्षा समिति की बैठक के दौरान आई.सी.सी. अध्यक्ष के साथ अपनी बैठक के बारे में जानकारी दी।। उक्त बैठक के दौरान कुछ वित्तीय इनपुट की आवश्यकता थी, जो उन्होंने दी थी। आई.सी.सी. के संवैधानिक प्रावधानों की समीक्षा के संबंध में बैठक के दौरान श्री ठाकुर ने बताया कि उन्होंने आई.सी.सी. के अध्यक्ष श्री शशांक मनोहर से पूछा कि जब वे बी.सी.सी.आई. के

अध्यक्ष थे, तो उन्होंने यह विचार रखा था कि न्यायमूर्ति लोढ़ा समिति द्वारा शीर्ष परिषद में सी.ए.जी. के लिए नामित व्यक्ति की नियुक्ति की सिफारिश सरकारी हस्तक्षेप के समान होगी और इसके लिए आई.सी.सी. से निलंबन कार्रवाई की जा सकती है। इसलिए उनसे अनुरोध किया गया था कि वे आई.सी.सी. के अध्यक्ष होने के नाते एक पत्र उस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए जो उन्होंने बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में ली थी, जारी कर सकते हैं। श्री मनोहर ने इसके बाद समझाया कि जब उनके द्वारा रुख अपनाया गया था, तो मामला सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष लंबित था और उस पर निर्णय नहीं लिया गया था। हालाँकि 18 जुलाई 2016 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अपना फैसला सुनाया और न्यायालय ने इस दलील को खारिज कर दिया कि शीर्ष परिषद में कैग के नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर होगी और यह भी माना कि आई.सी.सी. इस नियुक्ति की सराहना करेगी। क्योंकि इससे बोर्ड के वित्त में पारदर्शिता आएगी। इस मुद्दे पर उनके स्पष्टीकरण को देखते हुए चर्चा बंद हो गई। (जोर दिया गया)

22. प्रथम दृष्टया यह प्रतीत होता है कि जब श्री शेटी द्वारा समिति की स्थिति रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया दायर की गई थी, इन कार्यवृत्त ने उस दिन की रोशनी नहीं देखी थी, और बाद में इसे मनगढ़ंत श्री ठाकुर के संस्करण को विश्वास देने के लिए बनाया गया था। यह बयान कि श्री मनोहर से उस स्थिति को स्पष्ट करने का अनुरोध किया गया था जो उन्होंने बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष के रूप में ली थी, श्री मनोहर के इस खुलासे से गलत है कि उन्हें आई.सी.सी. अध्यक्ष के रूप में अपनी क्षमता में एक पत्र देने के लिए कहा गया था। श्री ठाकुर का कथन कि उन्होंने श्री मनोहर से अनुरोध किया था कि "वे आई.सी.सी. हैं, क्या अध्यक्ष को एक पत्र जारी किया जा सकता है जिसमें उस स्थिति को स्पष्ट किया जाये" जो उन्होंने बी.सी.सी.आई. अध्यक्ष के रूप में लिया था, उस प्रकटीकरण से गलत है जो श्री शशांक मनोहर द्वारा किया गया। श्री मनोहर की 2 नवंबर 2016 की प्रतिक्रिया स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि बैठक के दौरान 6 अगस्त 2016 को दुबई में, श्री ठाकुर ने उनसे आई.सी.सी. अध्यक्ष के रूप में अपनी क्षमता में एक पत्र जारी करने का अनुरोध किया कि बी.सी.सी.आई. में कैग के एक नामित व्यक्ति की नियुक्ति सरकारी हस्तक्षेप के बराबर हो सकती है, जिससे आई.सी.सी. से निलंबन की कार्रवाई की जा सकती है। प्रथम दृष्टया, रिकॉर्ड से यह सामने आता है श्री मनोहर ने कहा कि श्री ठाकुर ने आई.सी.सी. अध्यक्ष से इस तरह का पत्र मांगा था। श्री ठाकुर ने 15 अक्टूबर 2016 को अपने हलफनामे में जो खुलासा किया है, वह उनकी जानकारी में प्रथम दृष्टया गलत है। प्रथम दृष्टया, हम यह भी पाते हैं कि बी.सी.सी.आई. की कार्य समिति की बैठक के कार्यवृत्त जो इस न्यायालय के समक्ष पेश किए गए थे, श्री ठाकुर के कथन का समर्थन करने के लिए बनाए गए हैं।

23. हम तदनुसार इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि श्री ठाकुर ने अपने कार्यों और आचरण से निम्नलिखित कारणों से खुद को बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के रूप में बने रहने के लिए अयोग्य बना लिया है:

सबसे पहले, उन्होंने 18 जुलाई 2016 के इस न्यायालय के फैसले और आदेश में निहित निर्देशों के कार्यान्वयन में अवरोध और बाधा डाली। उनका अपना संस्करण यह है कि उन्हें सदस्यों को इस न्यायालय के आदेशों का पालन करने के लिए मजबूर करने के लिए किसी भी अधिकार के बिना पूरी तरह से अक्षम कर दिया गया है। यह इस बात का संकेत है कि उन्होंने अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अपने कर्तव्य और दायित्व से हाथ धोए थे।

दूसरा, प्रथम दृष्टया हमारा मानना है कि श्री ठाकुर इस न्यायालय के आदेशों में अवरोध और बाधा डालने के लिए न्यायालय की अवमानना के लिए कार्यवाही के लिए उत्तरदायी हैं।

तीसरा, प्रथम दृष्टया हमारा विचार है कि श्री ठाकुर ने इस न्यायालय के समक्ष शपथ पत्र पर बयान जो उनकी जानकारी में गलत कहा है। श्री ठाकुर को कारण बताने के लिए एक नोटिस जारी किया जाना चाहिए कि इस न्यायालय के समक्ष गलत बयान देने के लिए दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 340 सहपठित धारा 195 के तहत उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए।

24. पालन किए जाने वाले तौर-तरीकों को निर्धारित करने में, हमने 28 मार्च 2014 को इस न्यायालय के दो विद्वान न्यायाधीश जिनमें माननीय न्यायमूर्ति श्री ए. के. पटनायक और माननीय न्यायमूर्ति श्री एफ. एम. आई. कलीफुल्ला शामिल हैं, की एक पीठ द्वारा पारित आदेश से पोषण प्राप्त किया है। इसे ध्यान में रखते हुए जिन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष अपने कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ थे, इस न्यायालय ने एक प्रतिष्ठित क्रिकेट खिलाड़ी को एक अंतरिम उपाय के रूप में को आर्.पी.एल. 2014 के लिए अध्यक्ष के रूप में अध्यक्ष के कार्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त किया, अन्य सभी मामलों के संबंध में, बी.सी.सी.आई. के वरिष्ठतम उपाध्यक्ष को न्यायालय के आदेश के अधीन बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष के कार्यों का निर्वहन करने की अनुमति दी गयी थी।

25. उपरोक्त कारणों से, हम निम्नानुसार आदेश और निर्देश देते हैं:

- (i) बी.सी.सी.आई. और उससे संबद्ध राज्य संघ के सभी पदाधिकारी जो समिति द्वारा अनुशंसित और इस न्यायालय द्वारा स्वीकार किए मानदंडों को पूरा करने में विफल रहते हैं, वे तुरंत पद को त्याग करेंगे और पद धारण करना बंद कर करें नामतः

"एक व्यक्ति को पदाधिकारी होने के लिए अयोग्य ठहराया जाएगा यदि -वह :

(क) भारत का नागरिक नहीं है;

(ख) 70 वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है;

(ग) दिवालिया घोषित किया जाता है, या अस्वस्थ दिमाग का;

(घ) मंत्री या सरकारी कर्मचारी है;

(ई) क्रिकेट के अलावा किसी खेल या एथलेटिक संघ या महासंघ में कोई पद धारण करता है;

(च) संचयी रूप 9 वर्ष की अवधि से बी.सी.सी.आई. के पदाधिकारी रहे हैं;

(छ) न्यायालय द्वारा किसी आपराधिक अपराध के लिए आरोपित किया गया है।

- (ii) बी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर और सचिव श्री अजय शर्के तत्काल पद से हट जाएंगे और बी.सी.सी.आई. के कामकाज से जुड़े रहना समाप्त करेंगे;
- (iii) श्री अनुराग ठाकुर को कारण बताने के लिए एक नोटिस जारी किया जाएगा कि उनके खिलाफ दंड प्रक्रिया, 1973 संहिता की धारा 340 सहपठित धारा 195 के प्रावधानों के तहत कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए;
- (iv) श्री अनुराग ठाकुर को कारण बताने के लिए एक नोटिस जारी किया जाएगा कि उनके खिलाफ न्यायालय अवमानना अधिनियम, 1971 के तहत कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए;
- (v) प्रशासकों की एक समिति अपने मुख्य कार्यकारी अधिकारी के माध्यम से बी.सी.सी.आई. के प्रशासन की निगरानी करेगी;
- (vi) न्यायालय एक अलग आदेश द्वारा व्यक्तियों को नामित करेगा जो प्रशासकों की समिति का हिस्सा होंगे। ताकि नामांकन करने में सहायता के लिए न्यायालय को उद्देश्य का लाभ मिल सके, हम श्री फली एस नरीमन विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता और श्री गोपाल सुब्रमण्यम, विद्वान न्यायमित्र से अनुरोध करते हैं कि वे समान उद्यम के प्रबंधन में ईमानदारी और अनुभव वाले व्यक्तियों के नाम के सुझाव देकर न्यायालय की

सहायता करें। हम पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता से अनुरोध करते हैं कि वे भी अपने सुझाव न्यायालय के सामने रखें, ताकि एक सुविचारित निर्णय को सुगम बनाया जा सके;

- (vii) उपरोक्त (v) में साँपे गए कार्य के अलावा, समिति प्रशासकों की समिति यह भी सुनिश्चित करेगी कि 18 जुलाई 2016 के इस न्यायालय के फैसले में निहित निर्देश (जिसने समिति के रिपोर्ट को संशोधन के साथ स्वीकार किया) को पूरा किया जाता है और इस उद्देश्य लिए सभी आवश्यक और परिणामी कदम उठाए जाते हैं;
- (viii) उपरोक्त (ii) में निहित निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, बी.सी.सी.आई. के वरिष्ठतम् उपाध्यक्ष अध्यक्ष के कर्तव्यों का पालन करेंगे, आर. बी.सी.सी.आई. के संयुक्त सचिव, सचिव के कर्तव्यों का पालन करेंगे। बी.सी.सी.आई. के वे पदाधिकारी (अध्यक्ष और सचिव को छोड़कर) जो उपरोक्त खंड (i) के संदर्भ में अयोग्य नहीं हैं पद धारित करना जारी रख सकते हैं, यदि वे 18 जुलाई 2016 के फैसले में निहित निर्देशों का पालन करने और उन्हें लागू करने के लिए इस आदेश की तारीख के चार सप्ताह के भीतर इस न्यायालय के समक्ष बिना शर्त वचन पत्र दायर करें। इस न्यायालय द्वारा नामित प्रशासकों की समिति के कार्यभार संभालने पर, मौजूदा पदाधिकारी प्रशासकों की समिति के पर्यवेक्षण और नियंत्रण के अधीन कार्य करेंगे। प्रशासकों की समिति के पास पर्यवेक्षण और नियंत्रण के लिए सभी उचित निर्देश जारी करने की शक्ति होगी; तथा
- (ix) प्रशासकों की समिति के सदस्यों को देय पारिश्रमिक श्री न्यायमूर्ति आर. एम. लोढ़ा, श्री न्यायमूर्ति अशोक भान और न्यायमूर्ति आर. वी. रवींद्रन से बनी समिति के साथ परामर्श करके तय किया जाएगा। इसके बाद न्यायमूर्ति आर. एम. लोढ़ा समिति की भूमिका ऐसे मामलों पर समग्र नीति और निर्देश तक ही सीमित रहेगी जिन्हें इस न्यायालय द्वारा संदर्भित किया जा सकता है।
- (x) हम अनुभवी वरिष्ठ अधिवक्ता और विद्वान न्याय मित्र से अनुरोध करेंगे कि इस पर दो सप्ताह के भीतर अपने सुझाव न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। कार्यवाही को इस न्यायालय के समक्ष 19 जनवरी 2017 के पहले प्रशासकों के नाम के संबंध में निर्देश सुनाने के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा

26. तदनुसार इन शर्तों में एक आदेश होगा।

निर्देश जारी किए गए।